



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन

*¹ डॉ. रीटा शर्मा प्राचार्य एवं अशोक कुमार

¹ प्रोफेसर, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय केशव विधापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान, भारत।

² शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 16/ June/2025

Accepted: 15/July/2025

*Corresponding Author

डॉ. रीटा शर्मा प्राचार्य

प्रोफेसर, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा
महाविद्यालय केशव विधापीठ, जामडोली,
जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश:

सामाजिक व्यवहार से तात्पर्य बालक-बालिकाओं के उन समस्त व्यवहारों से है, जिनके द्वारा समाज में वे सामंजस्य स्थापित करते हैं। ऐसा व्यवहार जो व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण के प्रति किये गये प्रत्युत्तर से है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना। शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के 720 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी-परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द: विद्यार्थी, सामाजिक व्यवहार

प्रस्तावना:

सामाजिक व्यवहार का बालक पर सीधा प्रभाव पड़ता है। समुदाय ही उसकी सभ्यता और सामाजिक प्रगति का मुख्य आधार है। समाज व्यक्ति के नागरिक गुणों का विकास करता है और सेवा, त्याग और सहयोग की भावनाएँ उत्पन्न करता है अर्थात् व्यक्ति द्वारा किये जाने वाला व्यवहार जब समाज के अनुरूप होता है तो मुख्यतः सामान्य व्यवहार कहलाता है। यदि बालक के काम से उसके व्यवहार से सामाजिक प्रगति होती है तो समाज उसके व्यवहार की प्रशंसा करता है। समाज ऐसे व्यवहार को मान्यता देता है जिसके अन्तर्गत सहयोग, विचारशीलता, उदारता, सम्मान देना व प्राप्त करना, आज्ञा पालन, विनम्रता, गलती के लिए क्षमाप्रार्थी, सहनशीलता आदि गुण उसके व्यवहार में निहित होते हैं।

समस्या का औचित्य

सामाजिक व्यवहार से तात्पर्य बालक-बालिकाओं के उन समस्त व्यवहारों से है, जिनके द्वारा समाज में वे सामंजस्य स्थापित करते हैं। ऐसा व्यवहार जो व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण के प्रति किये गये प्रत्युत्तर से है। मनुष्य प्राणी मात्र में श्रेष्ठ होता है, इसलिए वह सुगठित एवं व्यवस्थित समाज में रहता है। सामाजिक व्यवहार का मुख्य आधार

दूसरों को अपने व्यवहार एवं व्यक्तित्व से प्रभावित करना तथा स्वयं दूसरे के व्यक्तित्व व व्यवहार से प्रभावित होना। बालक ज्यों-ज्यों विकसित होता है, त्यों-त्यों ही उसके शारीरिक मानसिक और संवेगात्मक व्यवहार का ही विकास नहीं होता, बल्कि उसका सामाजिक व्यवहार भी उन्नत होता जाता है, वह अधिकाधिक मानव प्रिय और सामाजिक बनता है।

अतः शोधार्थी ने अपने शोध का विषय “विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन” चुना है। जो वर्तमान समय में औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन

“विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन”

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

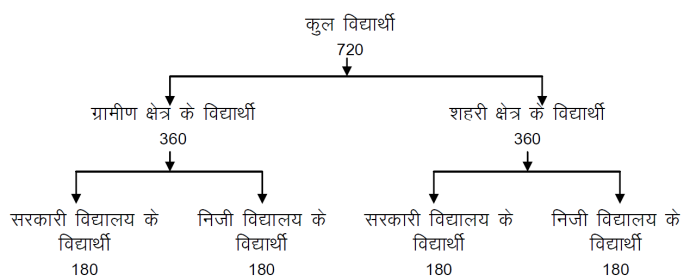
1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा मथुरा एवं अलीगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 720 विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमें ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थी हैं। जिसका विवरण निम्न प्रकार है-



शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में सामाजिक व्यवहार का मापन करने हेतु “सामाजिक व्यवहार मापनी”-

डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में टी-परीक्षण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना संख्या 1- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों	360	150-00	17-03	3-31	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों	360	155-00	23-74		

0.05 स्तर पर टी-मान = 1.96

स्वतंत्रता के अंश = 718 0.01

स्तर पर टी-मान = 2.58

तालिका संख्या-1 में स्वतंत्रता के अंश 718 पर टी का मान 3.31 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः परिकल्पना “ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है” दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 2- ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यार्थियों के विद्यार्थियों	180	152-00	17-11	3-15	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के निजी विद्यार्थियों के विद्यार्थियों	180	147-00	16-54		

0.05 स्तर पर टी-मान = 1.97

स्वतंत्रता के अंश = 358 0.01

स्तर पर टी-मान = 2.59

तालिका संख्या-2 में स्वतंत्रता के अंश 358 पर टी का मान 3.15 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना “ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है” दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 3- शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यार्थियों के विद्यार्थियों	180	150-00	26-82	4-09	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के निजी विद्यार्थियों के विद्यार्थियों	180	160-00	18-99		

0.05 स्तर पर टी-मान = 1.97

स्वतंत्रता के अंश = 358 0.01

स्तर पर टी-मान = 2.59

तालिका संख्या-3 में स्वतंत्रता के अंश 358 पर टी का मान 4.09 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है” दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष:

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ सूची:

1. भटनागर, सुरेश (1993): अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
2. चैहान, एस. एस.: उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस।
3. मित्तल संतोष एवं मित्तल दीपशिखा (2002): बाल मनोविज्ञान, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस लिमिटेड।
4. पाण्डेय, गणेश (2004): सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी, आगरा, राधा पब्लिकेशन।
5. राय, पारसनाथ (1998): अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मीनारायण।

6. सरीन शशिकला और सरीन अंजलि (2004): शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
7. सिंह लाभ, प्रसाद द्वारिका एवं भार्गव महेश (2000): सांख्यिकी के मूल आधार, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस।
8. शर्मा डीएल(2002): शिक्षा तथा भारतीय समाज, आर लाल बुक डिपो मेरठ
9. पांडे सत्य प्रकाश (1994): शिक्षा समाज तथा दर्शन आरबीएसए पब्लिशर्सजयपुर.
10. सिंह विजेंद्र एवं त्यागी सिंह ओंकार: उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा अरिहंत शिक्षा प्रकाशन जयपुर